P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-5* August- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

रायबरेली जिले की शहरी/ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियों (14–17 वर्ष) की तार्किक योग्यता के विशेष सन्दर्भ में सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि का अध्ययन

निशा गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर,
गृह विज्ञान विभाग,
महिला पी0 जी0 कालेज
अमीनाबाद, लखनऊ,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

बालेन्तिना प्रिया
शोध छात्रा,
गृह विज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश

शिक्षा समाज में नई तकनीक के साथ एक नया स्वरूप प्रदान करता है जिसके माध्यम से अपनी पहचान बनाने में कामयाब होता है। इसी बात को ध्यानल में रखते हुए समय एवं आवश्यकताओं के अनुरूप वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न नयी–नयी तकनीके एवं पद्धतियाँ विकसित हो रही है।[1] जो किशोरियों शारीरिक मानसिक एवं संवेगात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। और इस भूमिका को पूरा करना केवल विद्यालयों में ही सम्भव है। शिक्षा मानवीय विकास का महत्वपर्ण अंग है। यदि किशोरियों के आन्तिरिक विकास (मस्तिष्क) को शिक्षित कर दिया जाये तो वे किसी भी कार्य को कर सकती है और शिक्षित किशोरी किसी से पीछे नहीं रह सकती हैं डा0 वी0 आर अम्बेडकर ने संविधान को शिल्प करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा था कि किसी भी समाज का विकास जब तक पूर्णतया को प्राप्त नहीं होगा जब तक कोई स्त्री (किशोरी) पूर्ण रूप से शिक्षित नही होगी, क्योंकि यदि एक पुरूष शिक्षित है तो समाज का या देश एक नागरिक शिक्षित होगे। और नारी शिक्षित होगी तो पूरा परिवार शिक्षित हो जायेगा। जिनकी नारी परवरिश कर रही होगी।[2]

मुख्य शब्द : कोठारी कमीशन, मानसिक एवं तार्किक प्रबन्ध, उपकरण, प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तावना

शिक्षा वह शेरनी का दूध है, जो इसे पियेगा, गुर्रायेगा, अर्थात शिक्षा वह विधि है जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति अधिक से अधिक महान बन सकता है, शिक्षित व्यक्ति कभी किसी का गुलाम नहीं होता है। शिक्षा एक ऐसा अस्त्र है जिसके द्वारा कठिन से कठिन समाज को उसकी कठिनाइयों से बाहर निकाला जा सकता है। और बिना शिक्षा वाला व्यक्ति हमेशा दूसरे के अधीन और गुलामी की बेटियों को नही तोड़ सकता है। शिक्षा समाज में नई तकनीक के साथ एक नया स्वरूप प्रदान करता है जिसके माध्यम से अपनी पहचान बनाने में कामयाब होता है। इसी बात को ध्यानल में रखते हुए समय एवं आवश्यकताओं के अनुरूप वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न नयी–नयी तकनीके एवं पद्धतियाँ विकसित हो रही है।[1] जो किशोरियों शारीरिक मानसिक एवं संवेगात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। और इस भूमिका को पूरा करना केवल विद्यालयों में ही सम्भव है। शिक्षा मानवीय विकास का महत्वपर्ण अंग है। यदि किशोरियों के आन्तिरिक विकास (मंस्तिक) को शिक्षित कर दिया जाये तो वे किसी भी कार्य को कर सकती है और शिक्षित किशोरी किसी से पीछे नहीं रह सकती हैं डा0 वी0 आर अम्बेडकर ने संविधान को शिल्प करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा था कि किसी भी समाज का विकास जब तक पूर्णतया को प्राप्त नही होगा जब तक कोई स्त्री (किशोरी) पूर्ण रूप से शिक्षित नहीं होगी, क्योकि यदि एक पुरूष शिक्षित है तो समाज का या देश एक नागरिक शिक्षित होगे। और नारी शिक्षित होगी तो पूरा परिवार शिक्षित हो जायेगा। जिनकी नारी परवरिश कर रही होगी।[2] इस प्रकार किशोरी को शिक्षित करना परम आवश्यक है, शिक्षा प्रदान करने के समय ग्रामीण किशोरी और शहरी किशोरी में किसी तरह का बदलाव नही चाहिए चाहे वह पाठ्यक्रम में हो या अन्य क्षेत्र में।

किशोरियाँ (शहरी/ग्रामीण) विद्यालयों एवं महाविद्यालयो में विभिन्न विषयों का ज्ञान अर्जित करती है, जो उन्हे पाठ्यक्रम के अनुसार कराया जाता है, जैसे – विज्ञान, गणित, हिन्दी, सामाजिक अध्ययन तर्कशास्त्र गृह विज्ञान, रंगावट सजावट, काल्पनिक प्रक्रिया, सात्विक प्रक्रियाएं या स्थापित्य कला

आदि में शिक्षा दी जाती है, और किशोरियाँ अपने – अपने रूचि या तर्कपूर्ण प्रभाव से उस विषय का अध्ययन करती है। जिनके सहायता से किशोरी के भविष्य को संवारा जा सकता है। किशोरी को उचित शिक्षा सुविधाएं मिलने पर वह उस विषय की पारंगत हो सकती है। तर्क शक्ति सबसे अधिक गणित विषय पर होती है, लेकिन नवीन पाठ्यक्रमों में सामाजिक अध्ययन का ज्ञान और घरो की व्यवस्था, सजावट आलीशान व्यवस्था स्वादिष्ट भोजन पकवान नवीन जीवन शैली और भविष्य को दिशा देने में सामाजिक गृहविज्ञान का जितना अधिक महत्व है उतना शायद ही कोई विषय तार्किक हो। लेकिन सभी विषय अपने – अपने क्षेत्र में तर्क एवं नवीन अध्ययन करने के लिए प्रेरित करती है, जिसे किशोरियां उस विषय का आत्मलोचन करके भविष्य निर्माण के लिए सहायक हासिल करती है। भारत में स्त्री शिक्षा के लिए अनेक अयोग निमार्ण किये गये है। भारतीय संविधान के अनुसार शारदा एम्ट, हण्टरकमीशन कोठारी कमीशन आदि।[3]

कोठारी कमीशन के अनुसार आधुनिक शिक्षा में सामाजिक गृहविज्ञान व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। यह केवल भौतिक साजसज्जा विज्ञानों के विकास में ही सहायक नहीं है बल्कि अन्य सूक्ष्म जैविक जैविकी तत्वों के विकास में सहायक होता है। अतः प्राथमिक स्तरो के गृह प्रबन्ध और सामाजिक गृह प्रबन्धो के पाठ्यक्रमों को एकीकृत किया जाये और व्यवस्था (समाजिक गृहविज्ञान) के उन सिद्धन्तो एवं नियमों पर विशेष बल दिया जायें निसे किशोरियों में तार्किक क्षमता का विकास उत्पन्न किया जा सके और माध्यमिक एवं महाविद्यालयो स्तर पर सामाजिक गृह विज्ञान के विषय को आधुनिक बनाया जा सके।[4]

सामाजिक गृहविज्ञान व्यवस्था निणर्यो की एक श्रृंखला है, जिसमे पारिवारिक साधनों का उपयोग कर पारिवारिक एवं सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रक्रिया सम्मिलित है। प्रक्रिया में एक दूसरे पर निर्भर तीन या अधिक चरण होते है, आयोजन के विभिन्न तत्वों पर नियन्त्रण चाहे यह स्वयं के द्वारा लिया गया हो या अन्य के द्वारा और परिणामो तार्किकों का मूल्याकंन जो आगामी आयोजन के लिए मार्गदर्शन होता है।

पी0 निकेल और जेएम डारो के अनुसार ''गृह व्यवस्था संस्कृतियों में गृह उत्तर दायित्वो की व्यवस्था में भिन्नता होती है भिन्न–भिन्न संस्कृतियों पर्याप्त भिन्नता होती है।''

गुडइयर एवं क्लोहर के अनुसार प्रभावशाली व्यवस्था, मूल्यो को समझने एवं मानवीय और भौतिक साधनों से लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है।

जबकि कार्ट जिनके अनुसार – गृहव्यवस्था एक व्यवहारिक विद्वान है गृह व्यवस्था एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें आयोजन नियन्त्रण व मूल्यांकन के माध्यम से परिवारिक साधनों का उपयोग करके लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है। (ग्रौस एवं क्रेण्डल) जिस प्रकार से किशोरियों के जीवन में शिक्षा को महत्वपूर्ण बनाकर विभिन्न तार्किक आयामों के माध्यम से सजग बनाया जा सकता है। जो सामाजिक जीवन में अपना महत्वपूर्ण स्थान और गौरव हासिल कर सकती है।[5]

मानसिक एवं तार्किक प्रबन्ध किशोरियो के मस्तिष्क में अपने कल्पना शक्ति जो सामाजिक जीवन को महत्वपूर्ण बनाती है तार्किक योग्यता अथार्त तर्कणा एक प्रकार का वास्तविक चिंतन है तर्क–वितर्क के आधार पर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचकर वास्तविक लक्ष्य हासिल किया जा सकता है रेबर (1985) के अनुसार तर्क शक्ति यह तर्कणा के मूलरूप से दो अर्थ आसित्व में पाये गये है सामान्य अर्थो में तर्कणा अथवा कल्पना एक प्रकार का चिन्तन है जिसकी प्रक्रिया तार्किक एवं संगत होती है, और मुख्य रूप में तर्कणा एक समस्या समाधान और व्यवहारिक स्वरूप है जहाँ कल्पनाओं को वास्तिविक में तार्किकता प्रदान कर संगणित किया जा सकता है।

तर्क शक्ति (तर्कणा) में निम्नलिखित सोपानों का प्रबन्ध किया जा सकता है।

1. समस्या की पहचान
2. आकड़ों का संग्रहण
3. अनुमान पर पहुँचना
4. अनुमान के आधार पर प्रयोग करना
5. निर्णय करना
6. मूल्यों की परक
7. मूल्यों का संकलन करना

समाजिक गृहविज्ञान जो अनेक विषयो के रूप से निकला एक विषय है जिसमें तर्क शक्ति और सामाजिक सामन्जस का सिद्धान्त प्रतिपादित होता है दार्शनिक प्लेटो और अरस्तु ने सामाज के विषय में अनेक तर्क दिये है जो मानसिक शक्तियों को विकसित का अवसर प्रदान करता है यह एक शून्य आत्मा में चेतना जाग्रति उन्पन्न करने का कौशल प्रदान कर सकता है कौशल विकास किशोरियों के लिए एक नैसर्गिक वरदान होता है। जिसें वे सामाजिक गृहविज्ञान जीवन में समर्पित करती है जिसे उन्हे मान सम्मान एवं अभिमान स्वाभिमान प्राप्त होता है।[6]

शैक्षिक सामाजिक गृह विज्ञान की तार्किक अभिरूचि

तार्किक शैक्षिक सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि का सम्बन्ध शिक्षा सम्बन्धी विशेष रूप में घरो, मकानो, हवेलियों या स्थानों के रख–रखाव के साज सज्जा प्राइमरी चिकित्सा शिशु के विकास या किशोरियों की समस्याओ का विशेष निदान है। विघम अनुसार सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि किशोरी के व्यवहार के उस विशिष्ट गुणो की ओर संकेत करती है जो समस्याओं के विभिन्न आयामों को हल कर सकती है।

अतः किसी भी क्रिया या कौशल में आवश्यक सफलता प्राप्त करने के लिए किशोरी मे उसके प्रति अभिरूचि होनी चाहिए। तभी उस क्रिया या कौशल में अच्छा प्रदर्शन कर सकती है। सामाजिक गृह विज्ञान के सिद्धान्तों का अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में व्यापक रूप में प्रयोग किया जा रहा है। प्रत्येक मनुष्य को व्यवहारिक एवं सामाजिक जीवन में समस्याओं को हल करने के लिए किसी न किसी रूप में गृह विज्ञान का उपयोग करना पड़ता है।

अतः शोध कर्ता ने सामाजिक गृह विज्ञान को रपायबरेली जिले की अध्ययनरत किशोरियों के स्वरूप के अध्ययन का प्रयास किया है।

शोध का उद्देश्य

1. रायबरेली जिले की शहरी/ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियो की सामाजिक गृह विज्ञान की अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रमीण अध्ययनरत किशोरियो की तार्किक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. शहरी एवं ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियो की सामाजिक गुह विज्ञान अभिरूचि का तार्किक योग्यता के साथ सहसंवंधात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पानायें

1. शहरी एवं ग्रामीण किशोरियों की सामाजिक (गृह विज्ञान) अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
2. शहरी एवं ग्रामीण किशोरियों की तार्किक योग्यता में सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।
3. शहरी एवं ग्रामीण किशोरियो की सामाजिक (गृह विज्ञान) अभिरूचि का उनकी तार्किक योग्यता के साथ सार्थक सह सम्बन्ध नही पाया जायेगा।[7]

शोध उपकरण

बिना उपकरणों के माध्यम से किसी भी शोध का निर्माण नही किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन दो स्तरो पर पूर्ण किया है

प्रथम स्तर पर सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि परीक्षण की सहायता से शहरी ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियो में सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि का अध्ययन किया गया। इस परीक्षण के अन्तर्गत 40 प्रश्नों को लिया गया है। इन सभी प्रश्नों का उत्तर हाँ/नही (yes/No) के विकल्प के रूप में दिये गये है। जिन्हे शहरी एवं ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियों (14–17) वर्ष की किशोरियों से ही आँकड़े प्राप्त किये गये है।[8]

द्वितीय स्तर पर तार्किक योग्यता परीक्षण की सहायता से शहरी एवं ग्रामीण किशोरियो की तार्किक योग्यता का अध्ययन किया गया। इस परीक्षण में 35 प्रश्नों को लिया गया है। परीक्षण में सभी प्रश्न बहुविकल्पीय रूप दिये गये है, जिन्हे किशोरिया अ, ब, स, द के रूप में पढ़कर उस पर गलत या सही का निशान लगाकर प्रश्न को हल कर सकती है।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्त विश्लेषण के अन्तर्गत प्रस्तुत शोध पत्र में प्रदत्तो का विश्लेषण उद्देश्य पर आधारित है। माध्यमिक अथवा महाविद्यालयी किशोरियो जो शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत है किशोरियो (14 से 17) वर्षीय सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि तथा तार्किक योग्यता परीक्षण द्वारा प्राप्त प्राप्तांको की सहायता से मध्यमान प्रामाणिक विचलन सह सम्बन्ध उनका '1' परीक्षण द्वारा प्रदत्तो का विश्लेषण कर उनका सांरणीयन किया गया है। सह सम्बन्ध गुणांक काल पियर्सन विधि द्वारा ज्ञात किया गया है।[9]

परिणाम एवं विश्लेषण

शोध पत्र में प्राप्त अध्ययन का प्रथम उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण किशोरियो (14–17वर्षीय) की सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस हेतु शोधछात्रा (वालेन्तिना प्रिया) द्वारा प्रो0 संजय गोरा द्वारा निर्मित सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि संसूची का प्रयोग किया गया है। इसके बाद प्राप्त प्रदत्तो (आँकड़ो) का विश्लेषण परीक्षण द्वारा किया परिणाम तालिका 1 में दिये जा रहे है।

शहरी एवं ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियो की सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि की तुलना के लिए मध्यमान, मानक विचलन किशोरियो की संख्या (25+25+ = 50) जॉच के मान का विवरण निम्न प्रकार है।[10]

तालिका प्रथम

न्याय दर्श किशोरिया	मध्यमान (M)	मानक विचल (S.D.)	संख्या (N)	परीक्षण
शहरी किशोरिया	33.9	4.21	29	0.939
ग्रामीण किशोरियॉ	31.48	5.34	21	

किशोरिया = 50, 50–2 = 48 1 का मान 0.05 पर = 2.01 (टी) 1 का मान 0.01 स्तर पर 2.68 तालिका प्रथम के अनुसार (टी) 1 का मान 0.939 जो कि किसी भी स्तर पर सार्थक (Constant) नहीं पाया गया अर्थात शहरी एवं ग्रामीण किशोरियो की सामाजिक गृह विज्ञान व्यवस्था अभिरूचि की बीच सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त नही की जाती है।

अध्ययन का द्वितीय उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियो की सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि उनकी तार्किक योग्यता के साथ सह सम्बन्ध का अध्ययन करना था। इस हेतु सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि एवं तार्किक योग्यता के प्राप्तांको (प्रदत्तो) का सह सम्बन्ध आँकड़े प्राप्त हुये जिन्हे तालिका तृतीया में दर्शाये गये है।

तालिका तृतीया

शहरी एवं ग्रामीण किशोरियों की अभिरूचि का उनकी तार्किक योग्यता के साथ सहसम्बन्ध का अध्ययन

किशोरियां	सहसम्बन्ध का मान
शहरी अध्ययनरत किशोरियां	0.203
ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियों	0.429

शहरी अध्ययनरत किशोरियो के लिये तालिका तृतीय का मान 0.203 किसी भी स्तर पर सर्थक नही है। जिससे यह प्रदर्शित होता है कि शहरी किशोरियो की सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि तथा तथा तार्किक योग्यता के बीच सार्थक सम्बन्ध नहीं है। जबकि ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियो के लिए तालिका का मान 0.429 पाया गया जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है जो यह प्रदर्शित करता है कि ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियो की सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि का तार्किक योग्यता के साथ घनात्मक सहसम्बन्ध है, अतः शून्य परिकल्पना

स्वीकृत नहीं की जाती है। अर्थात ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियो को सामाजिक गृह विज्ञान अभिरूचि बढ़ाने के लिए साथ उनकी तार्किक योग्यता में भी वृद्धि होती है।

निष्कर्ष

शोध निष्कर्ष घनात्मक सही सिद्ध होता है। क्योंकि किशोरियों और अभिभावको में समस्याओं का अन्तर प्रत्येक स्तर पर तथ्यात्मक रूप से पाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सिंह अरूण कुमार : शिक्षा एवं मनोविज्ञान अनुसंधान पटना मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशन 2006*
2. *शर्मा आर. ए. : शिक्षा अनुसंधान मेरठ, लाल बुक डिपो मेरठ 2000*
3. *डॉ. सिंह रामपाल : शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा –7 सस्करण 2007–08*
4. *गुप्त एस. पी. : सांख्यिकीय विधियॉ शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण 2002*
5. *वेस्ट जान डब्लू : रिसर्च इन एजूकेशन नई दिल्ली प्रिटिंग हाल आफ इण्डिया 1963*
6. *पत्र पत्रिकाएं : दैनिक जागरण योजना कुलक्षेत्र एवं इण्डिया टुडे*
7. *शर्मा वीरेन्द्र : प्रकाश 2012 : रिसर्च मेथडोलॉजी, पंचशील प्रकाशन जयपुर।*
8. *तिवारी 1990 : विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के पालको का प्राथमिक स्तर में अध्ययनरत किशोरियों की शैक्षिक उपलब्ध केवल विज्ञान विषय का तुलनात्मक अध्ययन।*
9. *सिंह अरूण कुमार (2007) : संज्ञानात्मक मनोविज्ञान आगरा, मोती लाल बनारसी दास।*
10. *नाग लक्ष्मी (1996) : समस्या हल करने की योग्यता।*
11. *जर्नल्स : जनरल आफ इजुकेशन एण्ड साइकोलोजिकल रिसर्च वाल्यूम–2, आई. एस. 2230–9586 सी. एल. डी. एस मेमोरियल ऐजुकेशन सोसाइटी रिवारी।*